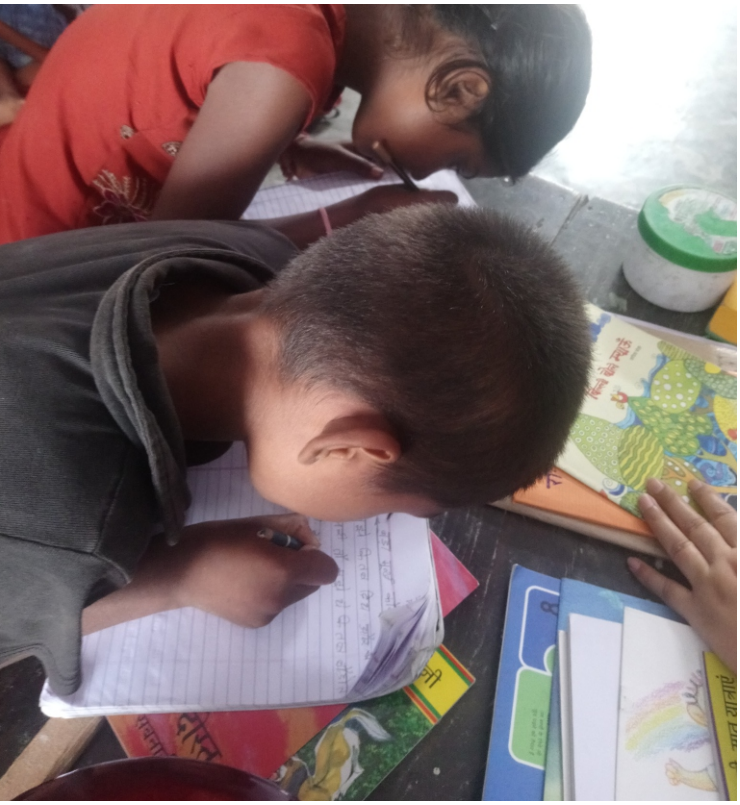

फोटो– अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन

शुरुआती कक्षाओं में भाषा शिक्षण

– कमला जोशी

बच्चों को पढ़ना–लिखना सिखाने की इस प्रक्रिया में मैंने यह पाया कि बच्चों के भाषा शिक्षण का कार्य समग्रता में होना चाहिए। उसमें यह न हो कि हम बच्चों को केवल वर्ण–मात्रा की पहचान ही कराते रहें और क्रियाकलाप बाद के लिए छोड़ दें। सीखने की सभी प्रक्रियाएं साथ–साथ चलती है।

भाषा बच्चों के सीखने–सिखाने की बुनियाद है। इसके बिना अन्य विषयों को पढ़ाने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। मुझे लगता है कि बच्चों की शुरुआती कक्षाओं में सभी विषय भाषा से ही जुड़ जाते हैं। अगर बच्चों की पहली–दूसरी कक्षाओं में भाषा की नींव सुदृढ़ कर दी जाए तो बच्चों को आगे अन्य विषयों के सीखने का कार्य आसान हो जाता है। अगर बच्चे प्राथमिक कक्षाओं में भाषाई कौशलों पर अच्छे से अधिकार प्राप्त कर लें तो जीवन की कई कठिनाइयां भी आसान बन जाती हैं। इससे उनके रोजमर्रा के जीवन में बहुत मदद मिलती है। विद्यालय में काम करते हुए प्राथमिक स्तर पर मुझे भाषा शिक्षण एक बड़ी चुनौती की तरह दिखाई पड़ता है।

विद्यालय में आते ही हम बच्चों को वर्णमाला और मात्राओं में इतना उलझा देते हैं कि कई बच्चों में पढ़ने के प्रति आनंद और उत्साह ही समाप्त हो जाता है और भाषाई क्रिया–कलाप बोझिल से हो जाते हैं। पढ़ने में उनको अरुचि होने लगती है। इसके साथ ही बच्चों के घर में उन्हें बहुत मदद न मिले तो बच्चे पिछड़ जाते हैं और वे अपने को असफल महसूस करते हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण पर बहुत गंभीरता से ध्यान देना आवश्यक होता है।

अभी मैं जिस विद्यालय में कार्य कर रही हूं उस विद्यालय में मेरा स्थानांतरण 2018 में हुआ। इस विद्यालय में बच्चों की संख्या वर्तमान में साठ है तथा हम तीन शिक्षक हैं। यहां सभी बंगाली समुदाय के बच्चे पढ़ने आते हैं उनमें से अधिकतर बच्चों के माता–पिता मजदूरी करते हैं। वे सुबह ही काम पर निकल जाते हैं और रात को ही घर आ पाते हैं। बच्चे विद्यालय में क्या कर रहे हैं? क्या सीख रहे हैं? इन बातों पर वे अपनी–अपनी दैनिक रोज़ी–रोटी की परेशानियों के चलते बहुत ध्यान नहीं दे पाते। उन्हें विद्यालय की बैठकों में भी बच्चों के बारे में बात करने का समय नहीं होता। प्रायः घर की मूलभूत जरूरतों को पूरा करना ही उनकी प्राथमिकता होती है।

हमारे विद्यालय का भवन ज्यादा बड़ा नहीं है मुझे एक कमरे में दो कक्षाओं को समायोजित करना पड़ता है। बच्चों के साथ शिक्षण करवाने में थोड़ी कठिनाई तो जरूर होती है किंतु बड़े बच्चों के साथ बैठकर छोटे बच्चे बहुत कुछ सीख जाते हैं। इस विद्यालय में जब मुझे भाषा

शिक्षण का कार्य मिला मैंने पहली–दूसरी कक्षाओं के लिए वर्णमाला कार्ड बनाए तथा अन्य शिक्षण सहायक सामग्री द्वारा पढ़ाने का प्रयास किया। यद्यपि मैं छोटे बच्चों को अर्थपूर्ण ढंग से पढ़ाने में कठिनाई महसूस कर रही थी। इस तरह विद्यालय में बच्चों के साथ कार्य करते–करते एक वर्ष व्यतीत हो गया।

अगस्त 2019 में हमारे विद्यालय का चयन डायट व अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा संचालित आरंभिक भाषा प्रोजेक्ट के लिए हो गया। इस प्रोजेक्ट के तहत हम लोगों के प्रशिक्षण, मासिक बैठकें तो हुई ही संदर्भ व्यक्तियों का विद्यालय आना–जाना भी हुआ। इस प्रोजेक्ट के तहत हमें खुद के पढ़ने और बच्चों के साथ कार्य करने के लिए बहुत सी शिक्षण सामग्री कविता, कहानियां, वर्कशीट आदि उपलब्ध करवाई गईं। इसके साथ ही इस समूह का एक व्हाट्सएप समूह भी बनाया गया। इस समूह में भी शिक्षण सहायक सामग्री भेजी जाती रही और हम इस पर अपने कक्षा कार्य को भी साझा करते रहे।

इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत हमें अपनी कक्षाओं में छह माह तक बच्चों के पढ़ने–लिखने में सुधार को लेकर कार्य करना था। इसके तहत मैंने कक्षा दो पर फोकस किया क्योंकि मुझे लगा इस कक्षा में अगर बच्चा अच्छे से पढ़ना–लिखना सीख जाता है तो उसे आगे सीखने में कठिनाई नहीं होगी और उसे सिर्फ मार्गदर्शन की जरूरत पड़ेगी। दूसरी कक्षा में उन्नीस बच्चे थे। इस कक्षा में 4 बच्चों–ज्योति, सूरज, श्याम, और नितेश का प्रवेश अगस्त माह में ही हुआ था। ये चारों बच्चे अपने पुराने प्राइवेट विद्यालय के डर को लेकर आए थे और वे कक्षा में मुझसे भी डरते थे। सूरज तो स्कूल में रोता ही रहता था। मैंने उससे बातचीत करने की बहुत कोशिश की पर वह बोलता ही नहीं था।

इस प्रोजेक्ट में चयनित विद्यालयों के शिक्षकों के पहले प्रशिक्षण के बाद दूसरी कक्षा के सभी बच्चों का बेसलाइन टेस्ट भी लिया गया। उसमें बच्चों को समझकर कार्य करना था। जब इसका परिणाम मैंने देखा तो पाया कि 19 में से 8 बच्चे ही सभी प्रश्न सही से कर पाए थे उनमें से भी उनके पूरे उत्तर सही नहीं थे। सभी बच्चों ने चित्र मिलाने वाला पहला प्रश्न ही सही किया था। बाकी उत्तरों में कहीं न कहीं गलतियां थीं।

अब मेरे लिए सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि अपनी कक्षा के बच्चों को पढ़ने–लिखने में सक्षम बनाना। इसके साथ ही नए बच्चों के मन से विद्यालय का डर निकालकर अपनी बातों को कह पाने में उन्हें सक्षम बना पाना एक महत्वपूर्ण उद्देश्य था।

कक्षा में मैंने बच्चों के साथ शिक्षण की शुरुआत छोटी कहानियों–कविताओं से की। बच्चों के साथ कहानियां हाव–भाव के साथ कक्षा में करवायीं। इस प्रक्रिया में मैंने देखा कि बच्चे इन कहानी–कविताओं में मज़ा लेने लगे। इन कविताओं पर बच्चों से बातचीत भी की जाती रही। उन्हें ये रचनाएं आसानी से याद भी होने लगीं। वे इन्हें बार–बार सुनना चाहते थे और सुनाना चाहते थे। बच्चों के लिए व्हाट्सएप समूह पर भेजी गईं कविताएं – जामुन, हाथी, चींटी, काली कोयल, स्कूल आदि बच्चों ने याद कर लीं। अब उन्हें पढ़ना और लिखना सिखाने का काम था। मैंने कविताएं सभी बच्चों को लिखवाईं उसमें संबंधित चित्र बनाने का कार्य भी करवाया। कक्षा का एक बच्चा सूरज जो बोलता नहीं था वह कविता सुनाने और चित्र बनाने में रुचि लेने लगा। इसके साथ ही बच्चों को श्यामपट्ट पर लिखी कविता को उंगली रखकर पढ़वाने का कार्य भी शुरू किया। इस प्रक्रिया में यह देखने को मिला कि कक्षा में करवाई गई कविता तो उन्हें याद थी परंतु उसको पढ़ते वक्त वह अनुमान लगाकर पढ़ रहे थे। आगे धीरे–धीरे वह शब्दों को पहचानने लगे और कविता पढ़ने लगे। इससे उनमें आत्मविश्वास पैदा हुआ कि वे भी पढ़ सकते हैं। मैंने बच्चों से कविताओं को लिखवाने का कार्य भी आरंभ किया। आगे मैंने कक्षा के बच्चों को दो समूहों में विभाजित किया एक समूह में वे बच्चे थे जो वर्णमाला पहचानते थे और जिन्हें मात्राओं का ज्ञान था और दूसरे समूह में वे बच्चे शामिल थे जिन्हें वर्णमाला की थोड़ी पहचान या बिल्कुल पहचान नहीं थी। इन बच्चों को इन्हीं कविताओं के माध्यम से वर्णमाला सिखाने का कार्य शुरू किया। कविता में बार–बार आने वाले शब्दों को लेकर वर्णों को पहचानने का कार्य शुरू किया। आगे उन्हीं शब्दों से मिलते–जुलते शब्द और मात्राओं को पहचानने का कार्य भी करवाया। इन सब प्रक्रियाओं के साथ बच्चों की अभिव्यक्ति क्षमता के विकास के लिए उन्हें कविताओं व कहानियों पर चित्र बनाने का कार्य भी

करवाया। यह कार्य धीरे–धीरे उनके रोज के काम में शामिल हो गया। इस कार्य को करने में बच्चे बहुत खुश रहते। इन प्रक्रियाओं में देखने को मिला जो बच्चे वर्णमाला पहचानते थे वे अब अच्छी तरह पढ़ना सीख रहे थे। ज्योति, विशाखा, दीना, आंचल, प्रिंस, नितेश आदि इन कार्यों को आसानी से कर पा रहे थे। जिन बच्चों– सूरज, तुलसी, श्याम को वर्णमाला की पहचान नहीं थी वे भी अब वर्णों को पहचानने लगे थे। इसी दौरान मुझे इन बच्चों के लिए बरखा सीरीज की पुस्तकों को खरीदने का मौका मिला इन पुस्तकों ने मेरे शिक्षण कार्य व बच्चों के पढ़ना सीखने में एक चमत्कार का कार्य किया।

इन किताबों से मैंने बच्चों को हाव–भाव के साथ कहानी सुनाना शुरू किया। इससे बच्चों को रोज़ कहानी सुनने की इच्छा होने लगी। इस प्रक्रिया में किसी कहानी को बीच में छोड़कर उनसे पूछती अब क्या हुआ होगा? तो बच्चे फौरन अनुमान लगा लेते। अब वे इन पुस्तकों को खुद ही पढ़ना चाहते थे मैंने उन्हें उंगली रखकर पढ़वाया और फिर उनसे इन किताबों को खुद पढ़ने के लिए भी कहा। बहुत सारे बच्चों ने चित्रों को देखकर अनुमान लगाकर पढ़ना प्रारंभ कर दिया। बच्चों के पढ़ने में यह देखने को मिला कि बहुत से बच्चों ने शब्दों के चित्र अपने मस्तिष्क में बना लिए थे वे एक ही शब्द बार–बार आने पर उसे आसानी से पढ़ पा रहे थे। आगे मुझे यह भी समझ में आया कि उन्होंने बहुत सारे शब्द सिर्फ इन्हीं किताबों को पढ़कर सीख लिए थे।

बच्चों के पढ़ने में यह देखने को मिला कि बहुत से बच्चों ने शब्दों के चित्र अपने मस्तिष्क में बना लिए थे। वे एक ही शब्द बार–बार आने पर उसे आसानी से पढ़ पा रहे थे।

आगे मैंने शिक्षण कार्य शुरू करने से पहले उन्हें इन पुस्तकों को देना शुरू कर दिया। इस दौरान उनसे पढ़ी हुई किताबों पर बातचीत करना अच्छा रहा। अब बच्चे मुझे अपनी बातें बिना डर के बताने लगे और उनसे एक गहरा जुड़ाव बन गया। इसी तरह मैंने उन्हें लिखने के अभ्यास भी कई तरीकों से करवाए। एक वर्ण से शुरू होने वाले अनेक शब्द लिखवाए। चित्रों के नाम लिखवाए। बच्चों से चित्र के आधार पर कहानी बनवाई। इसमें यह देखने को मिला बच्चों ने चित्र के माध्यम से उन शब्दों को अच्छे से समझ लिया। इस प्रक्रिया में आगे उनसे चित्रों पर वाक्य बनवाने का अभ्यास करवाया। इसमें यह भी देखने को मिला कि प्रिंस, विशाखा, ज्योति, टीना, आंचल, सूरज, तुलसी, सागर, विनीत आदि वाक्य बनाने का प्रयास करने लगे। मैंने उन्हें चित्र देखकर चार–पांच वाक्य लिखने को दिए। इस पर बच्चों ने मेरी उम्मीद से कहीं ज्यादा अच्छा लिखा। इसमें कुछ मात्रा की गलतियों को छोड़कर उन्होंने अच्छा लिखा। मैंने बच्चों को छोटी–छोटी कहानियां लिखवाकर उससे जुड़े प्रश्न उत्तर लिखने का अभ्यास भी उनसे करवाया। इस प्रकार बच्चे अब लिखना सीख रहे हैं।

अंत में यहां एक बात और जिक्र करना चाहूंगी कि मेरी कक्षा की एक बालिका तुलसी के पिता बालिका शिक्षा के विरोधी थे और उसे रोज़ विद्यालय नहीं भेजते थे। वह बच्ची काफी डरी भी रहती थी। अब उन्हें समझाने पर वह उसे विद्यालय भेजने लगे हैं। वह बच्ची जो पहले कुछ भी नहीं पहचानती थी अब कविताओं और कहानियों से बहुत से शब्दों को पहचानने लगी है। इसी तरह कुछ अन्य बच्चे जो विद्यालय आने में कतराते थे अब वे बच्चे भी खुशी–खुशी विद्यालय आने लगे हैं।

बच्चों को पढ़ना–लिखना सिखाने की इस प्रक्रिया में मैंने यह पाया कि बच्चों के भाषा शिक्षण का कार्य समग्रता में होना चाहिए। उसमें यह न हो कि हम बच्चों को केवल वर्ण–मात्रा की पहचान ही कराते रहें और क्रियाकलाप बाद के लिए छोड़ दें। मुझे लगता है सभी प्रक्रियाएं साथ–साथ चलती है। चाहे वह वर्ण–मात्रा पहचान की बात हो, बच्चों से बातचीत हो, किताबों का उपयोग हो अथवा चित्र बनाने या लिखने की बात हो। ये सारी ही प्रक्रियाएं बच्चों की समझ व अभिव्यक्ति की क्षमता को बढ़ाती हैं। मैं अभी इस बात के लिए भी प्रयासरत हूं कि कक्षा पांच के जो बच्चे अभी अच्छे से पढ़ना–लिखना नहीं सीख पाए हैं उनके साथ भी इसी तरह समग्रता में कार्य करूं जिससे उनका पढ़ना– लिखना बेहतर हो सके।

(लेखिका, राजकीय प्राथमिक विद्यालय आदर्श इंदिरा बंगाली कालोनी, रुद्रपुर, ऊधमसिंह नगर में अध्यापिका हैं)